॥ श्रीहनुमानचलीसा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि । बरनऊं रघुवर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवनकुमार । बल बुधि विद्या देहू मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुनसागर । जय कपीस तिहुं लोक उजागर ॥१॥
रामदुत अतुलितबलधामा । अंजनीपुत्र पवनसुत नामा ॥२॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥३॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥४॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । कांधे मूंज जनेऊ साजै ॥५॥
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥६॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥७॥
प्रभु चरित सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥८॥
सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रुप धरि लंक जरावा ॥९॥
भीम रुप धरि असुर सँहारे । रामचंद्र के काज सँवारे ॥१०॥
लाय सजीवन लखन जिजाये । श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥११॥
रघुपति कीन्ही बहुत बडाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावै । अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावै ॥१३॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि स के कहाँ ते ॥१५॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥
तुम्हरो मंत्र बिभिषन माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥१७॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥१८॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गए अचराज नाहीं ॥१९॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहू को डार ना ॥२२॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें कापैं ॥२३॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥२४॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥२५॥
संकट तें हनुमान छुडावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥२७॥
और मनोरथ जो कोइ लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ॥२८॥
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥३०॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥

अन्तकाल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥३४॥
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥३५॥
संकट कटै मिटे सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥३६॥
जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥३७॥
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥३८॥
जो यह पढै हनुमान चलीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥३९॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥४०॥

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रुप । राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

सियावर रामचंद्रकी जय । पवनसुत हनुमानकी जय ॥
उमापाति महादेवकी जय । बोलो रे भाई सब संतनकी जय जय जय ॥

इति तुलसीदास विरचितम् श्रीहनुमान चलीसा संपूर्णम्
सद्गुरु श्रीअनिरुद्धार्पणमस्तु ॥ शुभं भवतु । शुभं भवतु । शुभं भवतु ।